कवि एवं हास्य-व्यंग्यकार रवीन्द्रनाथ त्यागी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

Key Words: हास्य-व्यंग्य, कवि और व्यंग्यकार, व्यंग्य, समकालीन परिदृश्य, साहित्यकार।

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध अन्वयन

आजादी के बाद भारत की आम जनता के सरोकारों से प्रत्यक्ष जुड़ने वाले साहित्यकार रवीन्द्रनाथ त्यागीजी का साहित्य, उनकी सर्जना और चिंतना उनके व्यक्तित्व का ही परिचायक है। व्यंग्य-रचना एवं काव्य-रचना के क्षेत्र में सक्रिय, प्रतिभा के धनी रवीन्द्रनाथ त्यागी किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। सरकारी नौकरी में रहते हुए भी उन्होंने निरन्तर लेखन कार्य किया। उनकी रचनाएँ समकालीन विसंगतियों का बोध कराती हुई साहित्य को एक नया मुहावरा प्रदान करती हैं। उनका साहित्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य थाती है।

सन्तोष विश्नोई
जे. आर. एफ., शोधछात्रा,
हिन्दी विभाग,
वनस्थली विद्यापीठ,
राजस्थान।

स्वतंत्रता के बाद हास्य-व्यंग्य लेखकों की एक सशक्त पीढ़ी ने साहित्य क्षितिज को अभिभूत किया है, उनमें एक महत्त्वपूर्ण नाम हैं-रवीन्द्रनाथ त्यागी 'हिंदी-व्यंग्यकार-त्रयी' में रवीन्द्रनाथ त्यागी का नाम हरिशंकर परसाई और शरद जोशी के साथ तीसरे स्थान पर प्रतिष्ठित किया गया हैं। डॉ. कमल किशोर गोयनका इस सन्दर्भ में लिखते हैं, "हिंदी-व्यंग्य में यह त्रयी छायावाद के प्रसाद-पंत-निराला तथा नई कहानी के कमलेश्वर मोहन राकेश और राजेन्द्र यादव के समान प्रसिद्ध हुई, और इन्होंने हिंदी व्यंग्य को न केवल विस्तार और घनत्व प्रदान किया बल्कि कलात्मक दृष्टि से नए शिखरों तक पहुँचाया।"[1] रवीन्द्रनाथ त्यागी ने शिष्ट व्यंग्य लेखन के साथ साथ अपनी प्रतिभा और बौद्धिकता के सहारे हास्य-व्यंग्य की नींव डाली है। उन्होंने अपनी बात कहने के लिए नवीन कथ्य और शैली को विकसित किया। त्यागी जी का व्यंग्य लेखन उनकी साफगोई, गहन अध्ययन-मनन, भाषाई सहजता, आनन्द की अनूठी सृष्टि करने और स्थितियों के प्रति सोचने के लिए बाध्य करने में सक्षम है। समकालीन परिदृश्य का पूरा कैनवास इनके व्यंग्य में मिलता है। उनमें जितनी विषय की व्यापकता और वैविध्य मिलता है उतना उनके समकालीन किसी व्यंग्यकार में नहीं है। व्यंग्य लेखन में भाषा सबसे महत्त्वपूर्ण होती है। उनकी रचनाओं में उद्धरण, सिनेगीत, लोकगीत, शेर-शायरी, इतिहास कथन आदि का प्रयोग कर विषय को विस्तार देने में सफल रहे हैं। रवीन्द्रनाथ त्यागी ने अपने लेखन में समर्थ व्यंग्य भाषा का प्रयोग किया है। जो आम जन के निकट होते हुए भी उच्चतर साहित्यिक मापदण्डों पर खरी उतरती है। इस दृष्टि से स्वातन्त्र्योत्तर युग में शिल्प और कथ्य की दृष्टि से हिंदी-व्यंग्य को एक सशक्त और सुगठित स्वरूप प्रदान करने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

एक रचनाकार का असली व्यक्तित्व तो तब निखरता है, जब वह जिन्दगी की जिम्मेदारियों को स्वीकार करता हुआ स्वतन्त्र चिन्तन को विकसित कर लेता है। आज रवीन्द्रनाथ त्यागी हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनके व्यक्तित्व की प्रतिच्छवियों और चिन्तनाओं से नि:सृत उनका साहित्य हमें उपलब्ध है। लेखक कोई भी हो उसका व्यक्तित्व उसके सृजन को प्रमाणित करता हैं और सृजन व्यक्तित्व का परिचायक होता है। जब हम रवीन्द्रनाथ त्यागी जी के व्यक्तित्व पर दृष्टिपात करते हैं तो उनका साहित्य उनके व्यक्तित्व का ही प्रतिबिम्ब प्रतीत होता है। रवीन्द्रनाथ त्यागी के साहित्य में दो प्रमुख रूप सामने आते हैं- एक कवि और दूसरा हास्य व्यंग्यकार का। इसके अतिरिक्त उन्होंने उपन्यासकार, बाल साहित्यकार, समीक्षक, सम्पादक के रूप में भी लेखन किया है, परन्तु इन रूपों में उनकी

रचनाएँ अत्यल्प हैं।[2]

1 सितम्बर, 1931 को उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में स्थित नहटौर नामक कस्बे में जन्में रवीन्द्रनाथ त्यागी ने अपना बचपन बहुत ही गरीबी और अभाव में बिताया था। पिता के अकर्मण्य जीवन एवं माता की असहायता और दरिद्रता, और छः छोटे और तीन बड़े भाई-बहिन की मृत्यु ने इनके जीवन को बहुत कठिन और संघर्षशील बनाया। त्यागीजी के शब्दों में- "मुर्दों को देखने की आदत मुझे बचपन से ही पड़ गयी थी क्योंकि हर साल कोई भाई या बहिन मरता ही रहता था और उसके लिए कफन भी मुश्किल से ही मिलता था।"[2] भयंकर गरीबी के कारण वे 'डिप्रेशन' के मरीज बने। "मेरा आरंभिक जीवन बड़ी असहायता की स्थिति में व्यतीत हुआ। बाद में मुझे मानसिक रोग हो गया और डिप्रेशन का मरीज हो गया।'' गरीबी ने उन्हें बहुत कुछ सिखाया। इसलिए उन्होंने गरीबी को वरदान माना है। उनकी गरीबी ने ही उन्हें साहित्यकार बनने के लिए प्रेरणा दी। बचपन में गरीबी तथा विषम परिस्थितियों के कारण त्यागीजी के लिए स्कूल की पढ़ाई एक असंभव स्वप्न की बात थी पर इस सपने को उन्होंने वर्षों तक के स्वाध्याय द्वारा साकार किया। मध्यमा की परीक्षा पास कर वे किसी तरह पाठशाला में भरती हुए। वर्षों तक संस्कृत पढ़ी और बाद में मेहनत-मजदूरी करके नियमित शिक्षा प्राप्त की प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. किया, उसमें प्रथम स्थान प्राप्त किया और देश की सर्वोच्च सिविल सर्विसेज की प्रतियोगिता परीक्षा में बैठे और उसमें चुन लिए गए। अनेक विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने शिक्षा जारी रखी थी इस संबंध में त्यागीजी लिखते हैं- "मेरी आर्थिक स्थिति इतनी नाजुक थी कि यदि सारे समुद्रों की स्याही बने, सारे वृक्षों की कलम बने और सरस्वती जी यदि खुद ही वर्णन करने बैठें तो भी शायद सफलता को प्राप्त न हो। मगर हिम्मत थी कि मैं किसी तरह भी चौबीस घंटे का सफर तय करके इलाहाबाद पहुँच ही गया।[3] .....खैर, मेरे भाग्य में शिक्षित होना लिखा था और शिक्षा मुझे काफी मिकदार में मिली थी[4] पहले एक पाठशाला में संस्कृत पढ़ी अष्टाध्यायी के आठों अध्याय पढ़े। कालिदास और जयदेव ने मुझे अभिभूत कर दिया और उनका जादू अभी तक कायम है। शिल्प की पूर्णता क्या चीज होती है- यह मैंने संस्कृत से सीखा। इसके बाद एक परम दयालु हेडमास्टर की कृपा से मैं फिर स्कूल में भरती हो गया। उसके बाद मैं पढ़ता गया और पढ़ता गया।''

सन् 1950 में वे प्रयाग विश्वविद्यालय में आये थे। उन दिनों प्रयाग कवियों का नगर था। पंत, निराला, महादेवी वर्मा, बच्चन, फिराक और बिस्मिल इलाहाबाद में रहकर काव्य-सृजन करते थे। प्रयाग विश्वविद्यालय में आने के बाद उन्हें अनेक महान् लेखकों व विद्वानों का सानिध्य प्राप्त हुआ, जिनका उनके साहित्यिक जीवन पर बहुत प्रभाव रहा। कमलेश्वर, रामावतार चेतन, दुष्यंत कुमार, रमेश कुंतल मेघ जैसे महान साहित्यकार उनके सहपाठी थे। हरिवंशराय बच्चन, धर्मवीर भारती, जगदीश गुप्त जैसे दिग्गज उस समय उनके प्रेरक गुरु थे। उनके बारे में त्यागीजी ने लिखा है- "जिन दिनों मैं वहाँ पढ़ता था तब प्रायः प्रत्येक विभाग में अपने विषय का कोई दिग्गज वहाँ जरूर विराजमान था। इतिहास डॉक्टर ईश्वरीप्रसाद पढ़ाते थे, अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष सतीशचन्द्र देव थे, अर्थशास्त्र में जमशेद कै. खुसरू मेहता थे, गणित को डॉ. गोरखप्रसाद संभालते थे और रसायनशास्त्र में नीलरतन धर थे। हिन्दी विभाग जो था वह डॉ रामकुमार वर्मा की 'रेशमी टाई' से बँधा था।"[5] डॉ. धर्मवीर भारती ने उन्हें 'परिमल' का जूनियर सदस्य भी बनाया। रवीन्द्रनाथ त्यागी का परिचय सुमित्रनन्दन पंत, निराला, वाचस्पति पाठक, अमृतराय, बच्चन, प्रकाशचंद्र गुप्त तथा जगदीश गुप्त, शमशेर, विनोदचंद्र पांडेय से रहा। निराला ने तो रवीन्द्रनाथ त्यागी की लेखकीय प्रतिभा को पहचानकर उनके आगे चलकर महान साहित्यकार बनने की भविष्यवाणी भी की थी प्रयाग में उन्होंने पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, महादेवी वर्मा, उपेन्द्रनाथ अश्क, धर्मवीर भारती आदि को काफी नजदीक से जाना था।

प्रयाग विश्वविद्यालय से शुरू हुआ उनका काव्य-सृजन का सिलसिला बाद में भी जारी रहा। 'भारती-भंडार' द्वारा उनकी कविता की पहली पुस्तक प्रकाशित हुई। अपनी पहली पुस्तक देखकर वे फूले नहीं समाये। इस संदर्भ में त्यागीजी ने स्वयं लिखा है- "भगवान ने दिया तो छप्पर फाड़कर दिया। या तो पोथी छपती ही नहीं थी और छपी तो ऐसे संस्थान से छपी जहाँ से पोथी छपाने के लिए आपको प्रसाद, पंत या निराला होना जरूरी था। सूची-पत्र में इन लोगों के साथ अपना नाम देखकर मुझे महसूस हुआ कि मैं अगर इन कवियों से बड़ा नहीं तो कम से कम इनके बराबर जरूर हूँ। खैर, किताब जो छपी वह शान से छपी "फ्लैप पर सुमित्रनन्दन पंत, उपेन्द्रनाथ अश्क और रघुपति सहाय 'फिराक' की सम्मतियाँ थी, छपाई सम्मेलन मुद्रणालय में कराई गई थी, जिल्द रेक्सीन की थी, आवरण सोना घोषाल का था और कागज जो था वह शहर में सबसे बढ़िया था।"[6] रवीन्द्रनाथ त्यागी मूलतः कवि हैं तथा उन्हें कविताओं से ज्यादा सन्तुष्टि मिलती है। वे कहीं-कहीं हास्य-व्यंग्य में भी कवि हो जाते हैं। उनके लेखकीय जीवन का आरम्भ कविता से हुआ था। कविता उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का आधार हैं। अब तक उनके सात कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं- 1. सूखे और हरे पत्ते (1962), 2. कल्प वृक्ष (1965), 3. आदिमराग (1978), 4. आखिरकार (1978), 5. सलीब से नाव तक (1983), 6. अंतिम बसंत (1988), 7. कृष्णपक्ष की पूर्णिमा (1996)। डॉ. कमल किशोर गोयनका उनके कवि व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि, "त्यागीजी की काव्य यात्रा निजी जीवन की व्यथा, उदासी, प्रकृति विहीन शहरी जीवन, मानव की विभीषिका तथा उसकी नियति, मानव मुक्ति के साथ प्रकृति के प्रांगण में लौटने की अदम्य

आकांक्षा तक, अपनी अलग पहचान बनाती हुई निरन्तर आगे बढ़ती गई है। कवि की अनुभूतियाँ बहुआयामी हैं।''

रवीन्द्रनाथ त्यागी जब दु:खी होते हैं तब हास्य-व्यंग्य लिखते हैं और प्रसन्नचित होते हैं तो उदास कविता। अमृतराय उनके उत्कृष्ट हास्य-व्यंग्य लेखन का कारण उनकी उदासी ही मानते हैं। उनकी कविताओं में उदासी और गद्य में हास्य-व्यंग्य है। "मूलत: मैं कवि हूँ। व्यंग्य रचनाओं को जब मान्यता मिलने लगी तो मैं उन्हें लगातार लिखने लगा।''[7] रवीन्द्रनाथ त्यागी के लगभग चौबीस व्यंग्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें 'खुली धूप में नाव पर' (1963), 'भित्ति-चित्र' (1966), 'मल्लिनाथ की परम्परा' (1969), "कृष्णवाहन की कथा' (1971), 'शोकसभा' (1974), 'अतिथि-कक्ष' (1977), 'फूलों वाले कैक्टस' (1978), 'ऋतु वर्णन' (1979), 'भद्र पुरुष' (1980), 'इस देश के लोग' (1982), पदयात्रा (1985), 'पराजित पीढ़ी के नाम'(1988), 'आत्मलेख' (1988), 'विषकन्या' (1990), 'गणतन्त्र दिवस की शोभायात्रा' (1991), 'इतिहास का शव' (1993), 'देश-विदेश की कथा'(1994), 'भाद्रपद की सांझ' (1996), लाल पीले फूल (1997), 'बादलों का गाँव' (1999) आदि उनके प्रसिद्ध व्यंग्य-संग्रह हैं। अपनी सृजन प्रक्रिया के संबंध में उन्होंने स्वयं लिखा है- "मैं अपने वातावरण के प्रति सचेत रहता हूँ काफी पढ़ता-लिखता हूँ, कागज-कलम और टेबल का इंतजाम करता हूँ और बस लिखने बैठ जाता हूँ। आमतौर पर वही, लिखता हूँ जो कि लिखना चाहता हूँ, पर कभी-कभी इरादा होता है विद्यापति पर लिखने का और लेख का अंत होता है मेढक पर।''[8] "प्राय: रात को ही लिखता हूँ। रिटायरमेंट के बाद दिन में भी लिखने लगा हूँ। मैं प्रत्येक रचना को दो बार तो लिखता ही हूँ। कुछ रचनाओं को पाँच-पाँच दफा भी लिखा है।''[9] यह सच है कि लेखक सृजन-प्रक्रिया के समय भारी दबाव में रहता है। पर रवीन्द्रनाथ त्यागी तनाव और लेखन में भी मस्त रहते थे। उनके लेखन में एक विरोधाभास अवश्य मिलता है। अपने लेखन के संदर्भ में उनका कथन है- "मैं एक भावुक, उदास और बेहद खुशमिजाज व्यक्ति हूँ। तीनों एक साथ।''[10]

वस्तुत: रचनाकार, विशेषकर व्यंग्यकार के लिए तो यह आवश्यक होता है कि उसमें अपने परिवेश की सही समझ हो। उसकी विसंगतियों विकृतियों, को वह पहचान सके। यह पहचान और गहरी तब हो जाती है जब व्यंग्यकार ने स्वयं उन्हें अनुभव किया हो। अनुभव भोगे हुए यथार्थ से ही उपजता है और देखे गए परिवेश से भी देखे हुए परिवेश से इसलिए कि रचनाकार अतिरिक्त रूप से संवेदनशील होता है। इसी कारण वह आसपास की त्रासदियों से आम व्यक्तियों की तुलना में ज्यादा प्रभावित होता है और जिन बातों से वह प्रभावित होता है उन्हीं का प्रभाव उसके साहित्य में दिखाई देता है। रवीन्द्रनाथ त्यागी के सन्दर्भ में भी यही कहना ठीक है कि जिन लोगों के साथ वे रहे, जिन परिस्थितियों में रहे, जिनके जीवन से अपने जीवन को प्रभावित किया उन सबको अपनी रचना में कही न कही स्थान दिया। कुल मिलाकर जीवन के विविध अनुभवों ने ही उन्हें व्यंग्य करना सिखाया है। रवीन्द्रनाथ त्यागी हिन्दी व्यंग्य साहित्य में एक विलक्षण व्यक्तित्व लेकर आये। उन्होंने उसे एक नई गति, नई रंगत, नई दिशा दी और उसे परिवेश से जोड़कर यथार्थ का अभिव्यंजक बनाया। रवीन्द्रनाथ त्यागी मानते हैं कि व्यंग्य-लेखन चुनौती भरा है। थोड़ी-सी असावधानी रचना को सतही बना देती है। और थोड़ी-सी सजगता तथा कुशलता रचना को सार्थक बनाने के लिए सहायक होती है। इस जोखिम को रवीन्द्रनाथ त्यागी ने झेला एवं निबाहा है। इसलिए उनका व्यंग्य कलात्मक कुशलता का प्रमाण बना है। उनका व्यंग्य एक विशिष्टता लिए हुए है बिना लाग-लपेट, छल-प्रपंचों से दूर समाज के यथार्थ का पर्दाफाश करते थे। इस विशिष्टता के पीछे एक कारण यह भी था कि वे देश की सर्वोच्च सिविल सेवा के एक बड़े अफसर थे जिससे सत्य कहने में कही कोई हिचकिचाहट नहीं थी

उनका व्यंग्य लेखन काफी वृहत था। वे चाहे राजनीति की खिलाफत करें या रूढ़ियों की, साहित्य की विकृतियों का पर्दाफाश करें या नौकरशाही के भ्रष्ट व्यवस्था का गहराई से विश्लेषण करें, अभिप्राय: एक ही होता था- परिवर्तन और समाज एवं देश की सड़ी-गली परम्पराओं का निराकरण। रवीन्द्रनाथ त्यागी की दृष्टि बहुत विस्तृत है जो वर्तमान तक ही नहीं सिमटती, भविष्य के निर्माण तक पहुँचती दिखाई पड़ती है। रवीन्द्रनाथ त्यागी ने मानव मन की गहरी पड़ताल की थी वे उन स्थितियों पर चोट करते हैं जिनसे मनुष्य का जीवन संकटग्रस्त है। सत्य का उद्घाटन उनकी लेखनी की प्रमुख विशेषता रही है। तभी तो उनके लेखन में समाज की त्रासदी के जीवन्त चित्र देखने को मिल जाते हैं। आजादी के बाद नैतिक और सामाजिक-राजनैतिक पतन का दौर भी रवीन्द्रनाथ त्यागी ने अपने लेखन में जीवन्त किया है। भारतीय प्रजातांत्रिक व्यवस्था की विकृति और खोखलेपन को उजागर करते हुए रवीन्द्रनाथ त्यागी लिखते हैं कि, "हालांकि हमारे संविधान में हमारी सरकार को "एक प्रजातान्त्रिक सरकार' कह कर पुकारा गया है पर सच्चाई यह है कि चुनाव सम्पन्न होते ही 'प्रजा' वाला भाग जो है वह लुप्त हो जाता है और 'तन्त्र' वाला जो भाग होता है वही, सबसे ज्यादा शक्तिशाली हो जाता है।''[11] भारतीय विवाह पद्धति में दहेज जैसी विकराल परम्परा पर उन्होंने लिखा हैं कि- 'लोग लड़की की शादी में बुरी तरह टूट जाते थे, घर गिरवी रखे जाते थे, गाय-बैल बिक जाते थे और स्थिति कभी-कभी यह होती थी कि घर से कन्या के विदा होने के साथ-ही-साथ घर भी समाप्त हो जाता था।''[12] साहित्यकारों की समाज में आर्थिक दशा पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि- "मैं, हरिशंकर परसाई और शरद जोशी सारी उम्र लिखते रहेंगे, यश और

सम्मान पाते रहेंगे पर आर्थिक हस्ती वही, रहेगी जिसकी चर्चा गालिब ने की थी-

"चन्द तस्वीरें बुतां, चन्द हसीनों के खुतूत
बाद मरने के मेरे घर से यह सामां निकला।"[13]

रवीन्द्रनाथ त्यागी ने 'मुंशी प्रेमचन्द की शताब्दी', 'आओ मेरे वर्य तुम साहित्यकार बनो..', 'डायरी के पन्ने, 'बीच का आदमी', 'हिन्दी साहित्य में मुझे क्या ज्यादा प्रिय है?' शीर्षक रचनाओं में भी साहित्यकारों की आर्थिक विपन्नताओं को अभिव्यक्ति दी है। एक अफसर होने के नाते रवीन्द्रनाथ त्यागी ने अफसरशाही, अफसरों की अकर्मण्यता, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, लालफीताशाही, अफसरों के दौरे और उनके द्वारा आश्रयदाताओं की जी-हुजूरी करना आदि बातों पर प्रत्यक्ष व्यंग्य किया है। 'जब मैं दौरे पर गया' रचना में उन्होंने आत्म-व्यंग्य द्वारा सरकारी अफसरों की कार्य-प्रणाली, उनका रोब और आतिथ्य की पोल खोलते हुए लिखा है- "मैंने पत्नी की बात की कद्र की और डाकबंगले के बिल के भुगतान का भार भी अपने एक नायब पर ही छोड़ दिया। और हाँ, डाकबंगले की चम्मचें बहुत बढ़िया थी, खानसामा की निगाह बचा कर हम लोग दो अदद चम्मच भी उठा लाये।"[14] डॉ. जगदीश गुप्त ने उनकी साफगोई की विशेषता को सराहते हुए लिखा है कि, "रवीन्द्रनाथ त्यागी स्वभाव से जिन्दादिल, विनयी परन्तु साफगोई पसन्द, भीतरी सच्चाई को पकड़ने की कोशिश करने वाले व्यक्ति हैं।"[15]

प्राय: विद्वानों ने उनकी रचनाओं में लालित्य के प्राधान्य को स्वीकार किया है। स्वयं रवीन्द्रनाथ त्यागी हरिशंकर परसाई एवं शरद जोशी की रचनाओं से अपनी रचनाओं की तुलना करते हुए मानते हैं कि, "परसाई राजनीतिक सामाजिक सुधारक हैं, जोशी और श्रीलाल शुक्ल बड़े शिल्पकार हैं और मेरी प्रवृत्ति साहित्य और लालित्य की ओर है, यद्यपि राजनीतिक-सामाजिक व्यंग्य मैंने भी लिखे हैं।"[16]

निष्कर्षत: रवीन्द्रनाथ त्यागी अपने युग के सूक्ष्म निरीक्षक और युग द्रष्टा हैं। उनके साहित्य के आईने में तत्कालीन समाज की मूल्यहीनता, अनाचार, आर्थिक वैषम्य, खोखले आदर्श, थोथी धार्मिकता परिव्याप्त है। उनका साहित्य इन सब का मूक दर्शक नहीं है। वह इन विद्रूपताओं पर चोट करता है। "जो लोग साहित्यकार को एक अच्छे मनुष्य के रूप में देखना और जानना चाहते हैं, उन्हें त्यागीजी को निकटता से देखना और जानना चाहिए।"[17] रवीन्द्रनाथ त्यागी व्यंग्यत्रयी के एक महत्त्वपूर्ण व्यंग्यकार और एक सशक्त कवि हैं, जिनका अपना वैशिष्ट्य है। हिन्दी व्यंग्य के पितामह हरिशंकर परसाई, रवीन्द्रनाथ त्यागी के समग्र साहित्य को दृष्टि में रखकर लिखते हैं कि- "मैं रवीन्द्रनाथ त्यागी को एक श्रेष्ठ कवि और एक श्रेष्ठ व्यंग्यकार स्वीकार करता हूँ। उनकी विशिष्टता का एक प्रमुख कारण यह है कि हमारे जो प्राचीन क्लासिक्स हैं, उनमें उनकी गति है। वे सचमुच बहुत अच्छा लिखते हैं। उनके जैसा प्रवाहमय और विट-सम्पन्न गद्य, मुझसे लिखते नहीं बनता।" डॉ. धनंजय वर्मा का मत है कि त्यागी एक ओर हरिशंकर परसाई के तीक्ष्ण एवं प्रखर व्यंग्य से अलग हैं, तो दूसरी ओर शरद जोशी आदि व्यंग्यकारों से अधिक गहन और भास्वर हैं। उनमें एक सहज और स्वच्छंद लेखन की भंगिमा हर जगह है और इसीलिए वह एक ओर जहाँ निष्कलुष हास्य की सृष्टि करते हैं, वहीं, दूसरी ओर किसी भी ग्रंथि से मुक्त व्यंग्य की रचना भी"[18] भले ही वे व्यंग्यकार के रूप में अधिक प्रसिद्ध रहें हो परन्तु कवि रूप में भी वे एक सफल रचनाकार है।

सन्दर्भ:-

1. रवीन्द्रनाथ त्यागी, शोकसभा : गर्दिश के दिन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1974, पृ0 111
2. डॉ. कमलकिशोर गोयनका ,रवीन्द्रनाथ त्यागी : प्रतिनिधि रचनाएँ, साक्षात्कार से, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 1987, पृ0 324
3. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पदयात्रा : मिट्ठू बाबू, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1985 पृ. 37
4. रवीन्द्रनाथ त्यागी, शोकसभा, : गर्दिश के दिन, 1974, पृ. 112
5. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पराजित पीढ़ी के नाम : वे दिन इलाहाबाद के, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 1988, पृ. 68
6. रवीन्द्रनाथ त्यागी, ऋतु वर्णन : मेरी पहली किताब, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1979, पृ. 98
7. डॉ. कमलकिशोर गोयनका, रवीन्द्रनाथ त्यागी : प्रतिनिधि रचनाएँ, पृ. 11
8. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पदयात्रा : मेरा रचना संसार, पृ. 14
9. रवीन्द्रनाथ त्यागी, इस देश के लोग, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 1982 पृ. 118
10. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पदयात्रा : मेरा रचना संसार, पृ. 14
11. रवीन्द्रनाथ त्यागी, शोकसभा : गर्दिश के दिन, पृ. 113
12. रवीन्द्रनाथ त्यागी, भाद्रपद की सांझ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996, पृ. 115
13. रवीन्द्रनाथ त्यागी, कृष्णवाहन की कथा : प्राप्ते तु शोडषे वर्षे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1966, पृ.15
14. रवीन्द्रनाथ त्यागी, इतिहास का शव, पिकासो, इक़बाल और खाकसार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, पृ. 16
15. रवीन्द्रनाथ त्यागी, फूलो वाले कैक्टस : जब मैं दौरे पर गया, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 1978, पृ. 13
16. डॉ. कमलकिशोर गोयनका, रवीन्द्रनाथ त्यागी : प्रतिनिधि रचनाएँ, पृ. 331
17. वही, पृ. 318
18. डॉ. कमलकिशोर गोयनका, रवीन्द्रनाथ त्यागी : प्रतिनिधि रचनाएँ, भूमिका से, पृ. 19
19. डॉ. आशा रावत, कवि और व्यंग्यकार रवीन्द्रनाथ त्यागी, रचना प्रकाशन, जयपुर, 2001 पृ. 240
20. डॉ. कमलकिशोर गोयनका, रवीन्द्रनाथ त्यागी : प्रतिनिधि रचनाएँ, भूमिका से, पृ. 19

◆◆◆